पाठ्यचर्या विकास MAED-205

इकाई 4 : पाठ्यचर्या विकास के निर्धारक

डॉ मनीषा पंत

शिक्षा शास्त्र विभाग

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय

उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अंतर्गत आप

- पाठ्यचर्या विकास के निर्धारक
- पाठ्यचर्या विकास को प्रभावित करने वाले दार्शनिक कारक
- पाठ्यचर्या विकास को प्रभावित करने वाले सामाजिक कारक
- पाठ्यचर्या विकास को प्रभावित करने वाले मनोवैज्ञानिक कारक

के विषय में जानेंगे |

दर्शन, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान पाठ्यचर्या विकास में क्या भूमिका निभाते है? तथा इन विषयों का पाठ्यचर्या निर्माण में क्या महत्त्व है ?

- पाठ्यचर्या विकास के प्रमुख निर्धारक दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान एवं समाजशास्त्र हैं जिनके द्वारा ही सार्थक एवं प्रभावशाली पाठ्यचर्या निर्मित की जाती है।

पाठ्यचर्या विकास के दार्शनिक आधार

शिक्षा क्यों दें ? किसको दें ? कैसे दें ? कब दें ? तथा शिक्षा कैसी हो? आदि पाठ्यचर्या निर्माताओं को इन आधारभूत प्रश्नों पर विचार करना आवश्यक होता है।

- दर्शनशास्त्र मूलतः जीवन की आधारभूत समस्याओं के उत्तर प्राप्त करने और मानव जीवन को सार्थक बनाने के लिए किए जाने वाले अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जाता है।

- प्रत्येक दार्शनिक विचारधारा का पाठ्यचर्या पर अवश्य प्रभाव पड़ता है।

- देश और काल के अंतराल में विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं का जन्म हुआ है, उनमें से प्रमुख विचारधाराएँ निम्नलिखित हैं-

- आदर्शवाद (Idealism)
- प्रकृतिवाद (Naturalism)
- प्रयोजनवाद (Pragmatism)
- यथार्थवाद (Realism)
- अस्तित्ववाद (Existentialism)

आदर्शवाद और पाठ्य चर्या (Idealism and Curriculum)

- आदर्शवाद भौतिक जगत की तुलना में आध्यात्मिक जगत को अधिक महत्व देता है तथा वस्तु की अपेक्षा विचार को अधिक महत्वपूर्ण मानता है।
- शिक्षा के उद्देश्य आत्मानुभूति अथवा व्यक्तित्व का उन्नयन करना है।
- आदर्शवादी पाठ्यचर्या की रचना आदर्शों, विचारों एवं शाश्वत मूल्यों के आधार पर होती है।
- पाठ्यचर्या में प्रमुख विषयों- धर्मशास्त्र, अध्यात्मशास्त्र, भाषा, साहित्य, समाजशास्त्र, इतिहास, भूगोल, कला एवं संगीत आदि को शामिल करने पर बल देता है तथा शारीरिक शिक्षा, विज्ञान, गणित आदि को गौण विषय मानता है।

प्रकृतिवाद और पाठ्यचर्या (Naturalism and Curriculum)

- प्रकृतिवाद के अनुसार प्रकृति ही सब कुछ है, ईश्वर के अस्तित्व की मान्यता नहीं है तथा इस विचारधारा ने पदार्थ, भौतिक जगत एवं प्रकृतिक नियमों को सर्वाधिक महत्व दिया।
- प्रकृतिवादी, मनुष्य की मूल प्रवृतियों का शोधन एवं मार्गांतिकरण कर जीवन संघर्ष के लिए तैयार करना शिक्षा का उद्देश्य मानते हैं।
- प्रकृतिवादी पाठ्यचर्या की रचना बालक की प्रकृति एवं रुचियों, योग्यताओं के आधार पर की जाती हैं।

- इस पाठ्यचर्या में वैज्ञानिक विषयों को प्रमुख तथा मानवीय विषयों को गौण स्थान दिया जाता है।

- प्रकृतिवादियों के अनुसार मुख्य विषय- खेलकूद, शरीर विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, पदार्थ विज्ञान, वनस्पति विज्ञान एवं गणित आदि।

- प्रकृतिवादियों के अनुसार भाषा, साहित्य, सामाजिक विज्ञान, कला, संगीत आदि विषयों को कम महत्व दिया गया।

प्रयोजनवाद और पाठ्यचर्या (Pragmatism and Curriculum)

- प्रयोजनवादी दार्शनिक ईश्वर एवं आध्यात्मिक तत्व के स्थान पर व्यक्ति में विश्वास करते हैं तथा मानव की शक्ति के महत्व को स्वीकार करते हैं।
- इनके अनुसार मूल्य पूर्व निर्धारित नहीं होते हैं बल्कि निर्माण की अवस्था में हैं।
- प्रयोजनवादियों के अनुसार शिक्षा के कोई पूर्व निर्धारित उद्देश्य नहीं होते बल्कि उद्देश्य व्यक्तियों के होते हैं तथा देश, काल एवं परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं।

- प्रयोजनवादी पाठ्यचर्या उपयोगिता, रुचि, अनुभव तथा एकीकरण के सिद्धान्त पर आधारित होती है।
- पाठ्यचर्या के प्रमुख विषय स्वास्थ्य विज्ञान, शारीरिक विज्ञान, इतिहास, भूगोल, विज्ञान, गणित, गृह विज्ञान तथा कृषि शिक्षा आदि हैं।
- मानवीय एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को अधिक महत्व दिया।

यथार्थवाद तथा पाठ्यचर्या (Realism and Curriculum)

- यथार्थवादी दर्शन पूर्णत वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित है। यह स्थूल जगत को महत्व देता है।
- कारण- परिणाम के वैज्ञानिक नियम को सर्वव्यापी एवं सर्वमान्य मानता है तथा व्यक्ति एवं समाज दोनों में विश्वास करता है।
- यथार्थवादी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य सुखी एवं वास्तविक जीवन की तैयारी हेतु ज्ञानेन्द्रियों का विकास एवं प्रशिक्षण करना है

- यथार्थवादी पाठ्यचर्या उपयोगिता तथा आवश्यकता के सिद्धान्त पर आधारित होता है।
- पाठ्यचर्या में दैनिक जीवन मे उपयोगी विषयों को सम्मिलित किया जाता है।
- प्राकृतिक विज्ञान, भौतिकी, रसायन, स्वास्थ्य रक्षा, व्यायाम, भ्रमण, गणित, नक्षत्र विज्ञान, इतिहास, भूगोल आदि विषयों को शामिल किया गया है।

अस्तित्ववाद और पाठ्यचर्या (Existentialism and Curriculum)

- अस्तित्ववाद विचारधारा के पाठ्यचर्या का चयन छात्र स्वयं अपनी आवश्यकता, योग्यता एवं जीवन की परिस्थितियों के अनुकूल करता है।
- इस विचारधारा के अंतर्गत वैज्ञानिक विषयों की अपेक्षा मानवीय अध्ययनों पर विशेष बल दिया गया है। इस अध्ययनों के माध्यम से दुख, चिंता, मृत्यु, घृणा आदि का ज्ञान प्राप्त करना।
- इसके अंतर्गत कला, संगीत, साहित्य, धर्म, नैतिक सिद्धान्त व्यक्तिक चयन, चिंतन, स्व-उतरदायित्व विषयों को शामिल किया जाता है।

भारतीय दर्शन एवं पाठ्यचर्या (Indian Philosophy and Curriculum)

- भारतीय दर्शनिक विचारधारा के अनुसार ज्ञान हमारी आत्मा में निहित रहता है तथा शिक्षा द्वारा इसे प्रकाश में लाया जाता है।

- भारतीय दार्शनिक पाठ्यचर्या में यही धर्मशास्त्र, अध्यात्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, प्राचीन भाषाएँ, गणित, तर्कशास्त्र आदि विषयों को पढ़ाने का समर्थन करतें हैं।

पाठ्यचर्या विकास के सामाजिक आधार

- शिक्षा में सामाजिक प्रवृत्ति का तात्पर्य शिक्षा द्वारा बालकों में सामाजिक गुणों के विकास करने के प्रयास करने की प्रक्रिया से है जिससे व्यक्ति और समाज दोनों का कल्याण हो सके।
- शिक्षा में समाज की क्या भूमिका है? तथा पाठ्यचर्या निर्माण इससे कैसे प्रभावित होता है इसकी विशेषताएँ निम्नलिखित है-
- समाजशास्त्रीय प्रवृति (Sociological Tendency)
- सामाजिक स्थिति (Social Condition)
- सामाजिक दबाव वर्ग (Social Pressure Group)
- परिवार (Family)

- धार्मिक संगठन (Religious Organisations)
- शिक्षक एवं शिक्षार्थी (Teacher and Students)
- समाज की प्रकृति (Nature of the Society)
- समाज की बदलती आवश्यकताएं (Changing Needs of the Society)

पाठ्यचर्या विकास के मनोवैज्ञानिक आधार

- शिक्षा में मनोवैज्ञानिक प्रवृति ने शिक्षा के उद्देश्यों, शिक्षण पद्धति, पाठ्यचर्या , शिक्षा के संगठन, अनुशासन की अवधारणा, शिक्षक की भूमिका आदि सभी क्षेत्रों को नया आयाम प्रदान किया है।
- मनोवैज्ञानिक पाठ्यचर्या निर्माण के मुख्य निर्धारक निम्नलिखित है-
- परिपक्वता एवं विकास (Maturity and Development)
- व्यक्तिगत भिन्नता (Individual Differences)
- अभिरुचि (Interest)
- अभिप्रेरणा (Motivation)
- अधिगम प्रक्रिया एवं अधिगम का स्थानांतरण (learning Process and Transfer of learning)

पाठ्यचर्या नियोजकों के लिए उपयोगी अधिगम संबंधी सामान्य तथ्य

- अधिगम जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है तथा ये शिक्षार्थी की परिपक्वता से संबन्धित होती है।
- अधिगम बालक की शारीरिक, मानसिक, एवं संवेगात्मक विकास की दशाओं से प्रभावित होती है।
- अधिगम में शिक्षार्थी की सक्रिय सहभागिता आवश्यक होती है तथा अधिगम तभी प्रभावी होगा जब शिक्षार्थी का लक्ष्य स्पष्ट होगा।
- प्रभावशाली अधिगम के लिए अभिप्रेरणा का होना आवश्यक है तथा अधिगम के लिए मुक्त वातावरण सहायक होता है।

पाठ्यचर्या -नियोजकों के लिए अधिगम संबंधी कुछ सुझाव

- पाठ्यचर्या का संबंध बालक, प्रकृति एवं जीवन की वास्तविकता से होना चाहिए।
- विद्यालयों में प्रदान किया जाने वाला अनुभव बालकों की स्वाभाविक क्रियाओं एवं अभिरुचियों पर आधारित होना चाहिए।
- अधिगम-प्रक्रिया में "क्रिया द्वारा सीखना" अर्थात करके सीखने को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए।

- यथासंभव पाठ्यचर्या के लिए विषय-सामग्री का चयन वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से ही करना चाहिए।

- पाठ्यचर्या में बालकों को अभिप्रेरित करने के अधिक-से-अधिक अवसर सुलभ होने चाहिए जिससे वे विभिन्न क्रियाओं, चर्चाओं एवं रचनात्मक कार्यों में सक्रिय भाग ले सकें तथा उन्हें विभिन्न प्रकार के कौशलों एवं ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता का अनुभव भी हो सके।

THANKS